NAAC ACCREDITED "B++" (CGPA 2.89)

Yogoda Satsanga Mahavidyalaya

Jagannathpur, Dhurwa, Ranchi-834004

www.ysmranchi.net

ysmranchi4@gmail.com

Course : SEM-1 MN : 1A

(NEP)

Lesson: संगम युग

By : Dr. Amrita Dutta

Lecture No. 74

© All Copyrights are Reserved

This Video is an Intellectual Property of Yogoda Satsanga Mahavidyalaya, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand

Yogoda Satsanga Mahavidyalaya, located in Dhurwa, Ranchi, Jharkhand, holds the intellectual property rights for this video.

संगम युग

संगम साहित्य

ऐतिहासिक युग के प्रारम्भ में दक्षिण भारत का क्रमवद्ध इतिहास हमें जिस साहित्य से ज्ञात होता है उसे 'संगम साहित्य' कहा जाता है। इसके पहले का कोई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ हमें दक्षिण भारत से प्राप्त नहीं होता है।

इस प्रकार सुदूर दक्षिण के प्रारम्भिक इतिहास का मुख्य साधन संगम साहित्य ही है। 'संगम' शब्द का अर्थ परिषद् अथवा गोष्ठी होता है जिनमें तमिल कवि एवं विद्वान् एकत्र होते थे।'

प्रत्येक कवि अथवा लेखक अपनी रचनाओं को संगम के समक्ष प्रस्तुत करता था तथा इसकी स्वीकृति प्राप्त हो जाने के बाद ही किसी भी रचना का प्रकाशन संभव था। परर्म्परा के अनुसार अति प्राचीन समय में चाण्ड्य राजाओं के सरंक्षण में कुरती संक साहित्य को ही 'संगम-साहित्य' को संज्ञा प्रदान की जाती है।

संगम युग
संगम युग में आयोजित संगम

इन संगमों का विवरण इस प्रकार है-

- **प्रथम अंगम**

इसका आयोजन पाण्ड्यों को प्राचीन राजधानी मदुरा (जो अब समुद्र में विलीन हो अध्यक्षता अगस्त्य ने की। इन्हीं को दक्षिण में आर्य सभ्यता गयी है) के प्रचार का श्रेष प्रदान किया जाता है।

इस संगम में कुल 549 सदस्य सम्मिलित हुए। 4,499 लेखकों ने इसमें अपनी रचनाये उनके प्रकाशन की अनुमति प्राप्त किया |

यह संगम जिसे पाण्ड्य वंश के 89 राजाओं ने संरक्षण प्रदान किया था, चारहजार चार किदवारा संकलित महत्वपूर्ण प्रग्ध अकट्टियम् (अगस्त्यम्) परिषदाल, मुद्रनार, मुकुरुकुतथा करि दुर्भाग्यवश इनमें से कोई भी सम्प्रति उपलब्ध नहीं है

❑ द्वितीय संगम

❑ इसका आयोजन कपाटपुरम् (अलैवाई) में किया गया। इसकी अध्यक्षता का श्रेय भी अगस्त्य को ही दिया इसमें कुल 49 सेदस्य सम्मिलित हुए, तथा 59 पाण्ड्य शासकों का इसे संरक्षण मिला है।

❑ इस अपनी रचनाओं के प्रकाशन की अनुमति प्राप्त की तथा यह संगम इतनी ही अवधि तक अवाधगति से चलता ह रेस संगम द्वारा संकलित ग्रन्थों में एकमात्र 'तोल्काव्वियम्' ही अवशिष्ट है।

❑ यह तमिल व्याकरण का ग्रन्थ है जिल्ला इचना का श्रेय अगस्त्य ऋषि के शिष्य तोल्काप्पियर को दिया जाता है।

❑तृतीय संगम

प्रायः यह स्वीकार किया जाता है कि पाण्ड्य राजाओं की राजधानी मदुरा में एक संगम आयोजित किया गया और यह तीसरा संगम था।

❑इसमें संकलित कवितायें आज भी उपलब्ध हैं। इनकी संख्या 49 थी तथा इसने 449 कवित को उनकी रचनाओं के प्रकाशन की अनुमति प्रदान किया। यह संगम, जिसे 49 पाण्ड्य राजाओं का संरक्षण मिल 1,850 वर्षों तक चलता रहा।

❑ इसकी अध्यक्षता नहीरर ने की थी। इस संगम द्वारा संकलित उत्कृष्ट रचनायें नेहन्दी करुन्योर्क, नत्रिनई, एन्करुडूरु, पदित्रुप्पट, नूत्रैम्बधु, परि-पादल, कूघु, बरि, पेरिसे तथा सित्रिसें हैं।

पलब्ध संगम साहित्य का विभाजन तीन भागों में किया जा सकता है-

(1) पत्थुप्पात्तु (2) इत्युथोकै तथा पदिनेन कीलकन्छु।

'पत्युप्पातु' दस संक्षिप्त पदों का संग्रह है। इनके नाम हैं- तिरुमुरुगात्रप्पदै, पोरुनरूप्पदै शिरुमानासी रुम्वानारूप्पदै, मुल्लैप्पाट्ट, मदुरैक्कांची, नेडुनलबाडै, कुरिजिपाट्ट, पट्टिनपाले तथा रुद्रनकन्ननार तथा बाद मलैपडुहकाद्रम्।

(2) इनमें दो के छ पद क्रमशः मरुधनार, कन्द्रियार, नत्धप्यनार नप्पूधनार, कपिलर और कौसिकनार कवियों द्वारा विरचित है। इन पदों में चोल शासक करिकाल तथा पाण्ड्य शासक नेदुजेलियन इन पदों का समय द्वितीय शती ईस्वी के लगभग का है। के विवरण भी मिलते।

'इत्यधोकै' में आठ कवितायें है। नर्णिर (नत्रिणे), कुरुधाक, ऐगुरूनूरू, पदिर्हप्पत्तु, परिपाडल, कलितोगे, अहनानूर तहपुरनानूरू।

- इनमें संगमयुगीन राजाओं को नामावली के साथ-साथ उस समय के जन-जीवन एवं आचार-विचार विवरण भी प्राप्त होता है। ये प्राचीनतम तमिल साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचनायें हैं।

- इनमें कुल 2279 से भी अधिक कवितायें है जो 473 कवियों द्वारा विरेचित है। 'पदिनेनकीलकन्कु' में अठारह लघु कविताओं का संग्रह है जो मधे उपदेशात्मक है।

- नालडि, नान्मणिक्कडिगे, इन्नार्नापदु, इनियनार्पदु, कारनार्पद, कलवलिनार्पटु ऐन्तिगैएम्पटु, ऐन्दिमेएम्बर तिणैमालेएम्बदु तिणैमालेनीर्नरैम्बदु, कैन्त्रिले, कुरल, तिरिकडुकम, आशारक्कोवे, पलमोलि, शिरुमंचमूलम्, मुदुमौलिक्कार तथा एलादि।

- इनमें तिरुवल्लुवर का 'कुराल' सर्वोत्कृष्ट है। इसे तमिल साहित्य का एक आधारभूत ग्रन्थ वताया जाता है। इसके विषय त्रिवर्ग, आचारशास्त्र, राजेनीति, आर्थिक जीवन एवं प्रणय से संबंधित हैं।

➢शिल्पादिकारम् के कुछ कुछ समय बाद इस ग्रन्थ की रचना हुई तथा इस पर है।

➢इसकी रचना मदुरा के व्यापारी सौतलेसत्तनार ने की थी जो शिल्पादिकारम् का ही प्रभाव दिखाई देता एक वौद्ध था।

➢ इस महाकाव्य की नायिका मणिमेकले, कोवलन् (शिल्पादिकारम् के नायक) को प्रेमिका नर्तकी माधवी से उत्पन्न पुत्री है।

➢ "माधवी अपने पूर्व प्रेमी की मृत्यु का समाचार सुनकर बौद्ध भिक्षुणी बन जाती है। राजकुमार उदयकुमारन् मणिमेकले से प्रेम करता है तथा उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करता है।

➢ किन्तु मणिमेकले चमत्कारिक ढंग से अपने सतीत्व को बचा लेती है

THANK YOU!